अध्याय - 5 आधुनिक विश्व में चरवाहे

स्मरणीय तथ्य

- बुग्याल प्राकृतिक चरागाह जाड़ों में बर्फ से ढके रहते हैं और अप्रैल के बाद हरे-भरे हो जाते हैं।
- घुमंतू लोग रोजी-रोटी के जुगाड़ में यहाँ से वहाँ घूमते रहते हैं।
- जम्मू और कश्मीर के गुज्जर- बकरवाल समुदाय के लोग भेड़-बकरियों के बड़े-बड़े रेवड़ रखते हैं।
- गुज्जर- बकरवाल 19 वीं सदी में चरागाहों की तलाश में जम्मू और कश्मीर में आये और यहीं बस गये।
- हिमाचल प्रदेश में गद्दी चरवाहा समुदाय रहता है। ये पूरी गर्मी लाहौल और स्पीति में बिताते हैं जबकि जाड़ों में शिवालिक की पहाड़ियों में चले जाते हैं।
- सर्दी-गर्मी के हिसाब से हर साल चरागाह बदलते रहने का यह चलन हिमालय के पर्वतों में रहने वाले बहुत सारे चरवाहा समुदायों में दिखायी देता था।
- यहाँ के भोटिया, शेरपा और किन्नौरी समुदाय के लोग भी इसी तरह के चरवाहे थे।
- गद्दी समुदाय, भेड़ों से ऊन उतारकर उसे बेचते हैं या उससे ऊनी वस्त्र या कंबल बनाते हैं।
- धंगर, महाराष्ट्र का एक चरवाहा समुदाय है।
- पश्चिमी राजस्थान के थार रेगिस्तान वाले इलाके में राइका समुदाय ऊँट पालने के साथ-साथ खेती भी करते थे।
- कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में गोल्ला, कुरूमा और कुरुबा समुदाय चरवाहे का कार्य करते हैं।
- बंजारे, उत्तर-प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कई इलाकों में रहते थे।
- राजस्थान के पुष्कर तथा बलोतरा में ऊँटों का प्रसिद्ध मेला लगता है।
- औपनिवेशिक शासन के दौरान चरवाहों की जिंदगी में परिवर्तन आया क्योंकि उनके चरागाह सिमट गये और उनसे ज्यादा लगान लिया जाने लगा।
- अंग्रेज सरकार चरागाहों को खेती की जमीन में बदलना चाहती थी ताकि उसे लगान प्राप्त हो सके।
- अंग्रेजी सरकार ने 1871 ई. में अपराधी जनजाति अधिनियम पारित कर कई समुदायों को कुदरती और जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया।
- बचे-खुचे चरागाहों में चरने वाले जानवरों की तादाद बढ़ने लगी।
- चारे की कमी और अकाल की वजह से कमजोर और भूखे जानवर बड़ी संख्या में मरने लगे।
- अफ्रीका महाद्वीप में दुनिया की आधी से ज्यादा चरवाहा आबादी रहती है।
- बेदुईन्स, बरबेर्स, मसाई, सोमाली, बोरान, तुर्कान आदि अफ्रीका का चरवाहा समुदाय है।
- उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोप की साम्राज्यवादी ताकतों ने अफ्रीका में अपना उपनिवेश स्थापित कर चरवाहों का जीवन गहरे रूप से प्रभावित किया।
- यूरोपीय लोग बहुत सारे चरागाहों को पार्क का नाम देकर शिकारगाह बना दिये।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किस क्षेत्र में गुज्जर बकरवाल समुदाय के लोग भेड़-बकरियों को पालतें हैं

a. जम्मु और काश्मीर b. राजस्थान
c. झारखण्ड d. उत्तर-पूर्वी भारत

2. भारत का विशाल प्राकृतिक क्षेत्र बुग्याल किस भाग में स्थित है?

a. दक्षिणी भारत
b. उत्तर-पूर्वी भारत
c. उत्तर भारत के पूर्वी गढ़वाल में
d. मध्य भारत

3. 'घुमंतू' किसे कहतें हैं?

a. एक जगह स्थाई रूप से रहने वाले ।
b. किसी एक जगह टिक कर नहीं रहने वाले।
c. जंगलों में रहने वाले ।
d. इनमें से कोई नहीं।।

4. गुज्जर बकरवाल समुदाय जम्मू कश्मीर क्षेत्र में कब आये?

a. सत्रहवीं शताब्दी b. अठारहवीं शताब्दी
c. उन्नीसवीं शताब्दी d. बीसवीं शताब्दी

5. गुज्जर बकरवाल समुदाय किस महीने में ऊपर से नीचे शिवालिक पहाड़ियों में डेरा डाल लेते हैं?

a. अप्रैल b. जून
c. अगस्त d. सितम्बर

6. 'गद्दी' किस क्षेत्र के चरवाहों का एक समुदाय है?

a. उत्तराखण्ड b. हिमाचल प्रदेश
c. असम d. तमिलनाडू

7. गद्दी चरवाहा समुदाय कौन-सा जानवर पालते हैं?

a. गाय b. भैंस

c. भेड़-बकरियाँ d. ऊँट

8. गुज्जर चरवाहा समुदाय कौन-सा जानवर पालते हैं?

a. गाय-भैंस b. भेंड

c. बकरी d. ऊँट

9. गढ़वाल और कुमाऊँ के निचले हिस्से के आस-पास पाए जाने वाला शुष्क या सूखे जंगल का इलाका क्या कहलाता है?

a. भाबर b. बुग्याल

c. खादर d. बांगर

10. ऊँचे पहाड़ों में स्थित घास के मैदान क्या कहलाते हैं?

a. भाबर b. बुग्याल

c. खादर d. बांगर

11. पहाड़ी इलाकों में रहने वाले चरवाहे किस मौसम में निचली पहाड़ियों में आ जाते थे?

a. ग्रीष्म-ऋतु b. वर्षा-ऋतु

c. शीत ऋतु d. इनमें से कोई नहीं।।

12. हिमालय के पर्वतों में रहने वाले भोटिया, शेरपा और किन्नोरी समुदाय के लोग कौन-सा कार्य करते थे?

a. कृषि b. व्यापार

c. लूटपाट d. चरवाहा

13. 'धंगर' किस क्षेत्र का जाना- माना चरवाहा समुदाय है?

a. हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र। b. झारखण्ड क्षेत्र।

c. दक्षिणी भारत। d. महाराष्ट्र।

14. 'धंगर' समुदाय कौन सा कार्य करता था?

a. चरवाहे थे।

b. कम्बल और चादर बनाते थे ।

c. भैंस पालते थे ।

d. उपर्युक्त सभी कार्य करते थे ।

15. अक्टूबर के आसपास 'धंगर' समुदाय चरागाह की तलाश में महाराष्ट्र के मध्य पठारों के बीच से कहाँ चले जाते थे?

a. कोंकण तट b. मध्य भारत

c. दक्षिण भारत d. पूर्वी भारत

16. रबी फसल किसे कहते हैं?

a. सितम्बर-अक्टूबर में कटने वाली फसलें।

b. मार्च अप्रैल में कटने वाली फसलें।

c. दिसम्बर-जनवरी में कटने वाली फसलें।

d. इनमें से कोई नहीं। ।

17. मॉनसून के आगमन पर बुआई तथा सितम्बर-अक्टूबर में कटने वाली फसलों को क्या कहते हैं?

a. खरीफ़ b. रबी

c. जायद d. इनमें से कोई नहीं। ।

18. राइका समुदाय किस क्षेत्र से सम्बंधित है?

a. हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र।

b. थार रेगिस्तान।

c. मध्य भारत।

d. इनमें से कोई नहीं। ।

19. गोल्ला समुदाय किस क्षेत्र से सम्बंधित है?

a. थार रेगिस्तान से।

b. महाराष्ट्र से।

c. कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश के सूखे क्षेत्रों में।

d. उत्तर-पूर्वी भारत में ।

20. गोल्ला समुदाय कौन से जानवर पालते थे?

a. भेंड-बकरियाँ b. गाय-भैंस

c. ऊँट d. सूअर

21. कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के सूखे मध्य पठारों में रहने वाली कुरुमा समुदाय कौन-सा कार्य करती थी?

a. भेड़-बकरियाँ पालते थे।

b. हाथ के बुने कम्बल बेचते थे।

c. a और b दोनों।

d. खेती करते थे ।

22. निम्न में से कौन सा चरवाहा समुदाय व्यापार के लिए भी जाना जाता है?

a. बंजारा b. गोल्ला

c. कुरुमा d. कुरुबा

23. बंजारा चरवाहा समुदाय किस इलाके में रहते थे?

a. उत्तर-प्रदेश और पंजाब

b. मध्य प्रदेश

c. महाराष्ट्र

d. सभी क्षेत्रों में ।

24. फ्रांसिस हेमिल्टन बुकानन ने किस समुदाय के बारे में वर्णन किया है?

a. बंजारा b. गोल्ला

c. धंगर d. राइका

25. राइका समुदाय कौन सा कार्य करती थी?

a. खेती । b. ऊँट पालते थे ।

c. भेंड बकरियाँ पालते थे। d. सभी कार्य करते थे ।

26. पश्चिमी राजस्थान का बलोतरा स्थान किस पशु मेले के लिए विख्यात है?

a. ऊँट b. बकरी

c. भेंड d. गाय-भैंस

27. पुष्कर का ऊँट मेला किस राज्य में लगता है?

a. उत्तराखंड b. राजस्थान

c. झारखण्ड d. महाराष्ट्र

28. किस महाद्वीप में दुनिया की आधी से ज्यादा चरवाहा आबादी रहती है?

a. एशिया b. अफ्रीका
c. दक्षिण अमेरिका d. उत्तरी अमेरिका

29. अफ्रीका में लगभग कितने लोग चरवाही पर निर्भर है?

a. एक करोड़ b. डेढ़ करोड़
c. सवा दो करोड़ d. तीन करोड़

30. बेदुईन्स, बरबेर्स, मासाई, सोमाली, बोरान और तुर्कानचरवाहा समुदाय किस महादेश में निवास करती है?

a. एशिया b. अफ्रीका
c. यूरोप d. उत्तरी अमेरिका

31. मसाईलैंड से सटा हुआ कौन सा पर्वत है?

a. केन्या पर्वत b. एल्गान पर्वत
c. किलिमंजारो पर्वत d. डैकेंसबर्ग पर्वत

32. निम्नांकित में से किनका मानना था कि जमीन पर हल चलाना प्रकृति के विरुद्ध है?

a. बेदुईन्स b. बरबेर्स
c. मासाई d. सोमाली

33. मसाई पशुपालक अफ्रीका के किस भाग में रहते हैं?

a. उत्तरी b. दक्षिणी
c. पश्चिमी d. पूर्वी

34. प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व तांगान्यिका किस यूरोपीय देश का उपनिवेश था?

a. जर्मनी b. फ्रांस
c. इंग्लैण्ड d. नीदरलैंड

35. तांगान्यिका पर ब्रिटिश कब्ज़ा कब हुआ?

a. 1918 ई. b. 1919 ई.
c. 1920 ई. d. 1921 ई.

36. तांगान्यिका को किस वर्ष आज़ादी मिली?

a. 1947 ई. b. 1951 ई.
c. 1961 ई. d. 1971 ई.

37. औपनिवेशिक शासन ने मसाइयों के पास से उसका लगभग कितना फीसदी हिस्सा उनसे छीन लिया?

a. 50% b. 60%
c. 70% d. 80%

38. कीनिया में कौन सा नेशनल पार्क है?

a. मासाई मारा b. साम्बूरु नैशनल पार्क
c. a & b दोनों d. सेरेन्गेटी पार्क

39. सेरेन्गेटी पार्क किस देश में स्थित है?

a. कीनिया b. जिम्बाबे
c. तंजानिया d. दक्षिण अफ्रीका

40. 'मासाई' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

a. मेरे लोग b. मेरा घर
c. मेरा देश d. इनमें से कोई नहीं।

41. मासाई समुदाय आजीविका के लिए किस पर निर्भर रहता था?

a. दूध b. मांस
c. दूध एवं मांस दोनों d. इनमें से कोई नहीं।।

42. 1933 ई. और 1934 ई. में पड़े सूखे की वजह से मासाइयों के लगभग कितने जानवर मर गए?

a. 1/2 b. 1/3
c. 1/4 d. 1/5

43. उपनिवेश बनने से पहले मासाई समाज कितने सामाजिक श्रेणियों में बंटा हुआ था?

a. 4 b. 3
c. 2 d. इनमें से कोई नहीं।।

44. हिमालय के अधिकांश चरवाहा समुदायों में कौन सी समानता पाई जाती है?

a. ये लोग ऋतु के अनुसार स्थान बदलते थे।
b. ये लोग घुमंतू थे ।
c. a और b दोनों।
d. इनमें से कोई नहीं।।

45. इनमें कौन अफ्रीका का सबसे पुराना चरवाहा कबीला कहलाता है?

a. मासाई b. राइका
c. काओकोलैंड d. इनमें से कोई नहीं।।

46. निम्न में से कौन सी बात चरवाहों के जीवन को गहरे रूप से प्रभावित नहीं किया?

a. चरागाहों का खेतों में रूपांतरण।
b. वन कानून लागू होना।
c. चरवाहों पर नये कर लगाना।
d. उद्योग-धंधे का विकास।

47. निम्नांकित में से कौन अफ्रीका का चरवाहा नहीं है?

a. मासाई b. सोमाली
c. बंजारे d. उपर्युक्त सभी।

48. कबीले की सुरक्षा और लड़ाई का कार्य मासाई समुदाय में किसका था?

a. वरिष्ठ जन b. योद्धा
c. महिलाओं d. बच्चों

49. निम्न में से किस राज्य में बंजारे नहीं पाये जाते हैं?

a. राजस्थान b. पंजाब
c. झारखण्ड d. उत्तर प्रदेश

50. परम्परागत अधिकार किसे कहते हैं?

a. देश के संबिधान द्वारा प्रदत्त अधिकार ।
b. सरकार कानून बनाकर जो अधिकार देती है?।
c. परम्परा और रीति-रिवाज के आधार पर मिलने वाला अधिकार।
d. इनमें से कोई नहीं। ।

51. धन्गरों का स्वागत कहाँ के किसानों ने किया?

a. नागपुर के किसान। b. मालाबार के किसान।

c. कर्नाटक के किसान। d. कोंकण के किसान।

52. गुज्जर मंडप क्या था?

a. गुज्जर का कार्यस्थल जहाँ घी निकाला जाता था ।

b. पूजा स्थान ।

c. विवाह का स्थान।

d. इनमें से कोई नहीं।।

53. मासाई काबिले के योद्धाओं का क्या काम था?

a. कबीले की हिफाजत करना ।

b. दुसरे कबीले का मवेशी छीन कर लाना ।

c. a और b दोनों।

d. इनमें से कोई नहीं।।

54. "वे गहरे लाल रंग की शुका और चमकदार मोतियों के आभूषण पहनते हैं तथा स्टील की नोक वाला पाँच फुट लम्बा भाला रखतें है"।- यह कथन किनके लिये है?

a. मासाई कबीले के वरिष्ठ जन के लिये ।

b. मासाई कबीले के योद्धाओं के लिये ।

c. नामीबिया के काओकोलैंड चरवाहे के लिए।

d. तुर्काना पुरुष चरवाहों के लिये।

55. 1964 ई. में तांगान्यिका में कौन-सा क्षेत्र मिलाने के बाद उसका नाम तंजानिया पड़ा?

a. जायरे b. कीनिया

c. इथोपिया d. जंजीबार

56. ठूँठ क्या होता है?

a. पौधे की कटाई के बाद बचा हुआ भाग ।

b. एक प्रकार का कृषि औजार ।

c. एक जंगली पौधा।

d. युद्ध करने का एक अस्त्र।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1	a	15	a	29	c	43	c
2	c	16	b	30	b	44	a
3	b	17	a	31	c	45	a
4	c	18	b	32	c	46	d
5	d	19	c	33	d	47	c
6	b	20	b	34	a	48	b
7	c	21	c	35	b	49	c
8	a	22	a	36	c	50	c
9	a	23	d	37	b	51	d
10	b	24	b	38	c	52	a
11	c	25	d	39	c	53	c
12	d	26	a	40	a	54	b
13	d	27	b	41	c	55	d
14	d	28	b	42	a	56	a

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. चरवाहे किसे कहते हैं?

उत्तर- वैसे लोग जो मवेशियों को पालकर अपना जीवन यापन करते हैं, चरवाहे कहलाते हैं।

2. खरीफ फसल किसे कहते हैं?

उत्तर- वह फसल जो वर्षा ऋतु के आरंभ में बोया जाता है तथा शीत ऋतु के आरंभ में काट लिया जाता है, खरीफ फसल कहलाता है। उदाहरण चावल, मक्का आदि।

3. भारत के मुख्य चरवाहा समुदायों के नाम लिखें ।

उत्तर- गुज्जर बकरवाल, गद्दी, राइका, बंजारे, धन्गर, कुरूमा, कुरुबा और गोल्ला आदि भारत के मुख्य चरवाहा समुदाय है।

4. वर्षा ऋतु में धन्गर चरवाहे कोंकण और तटीय इलाके छोड़कर सूखे पठारों की तरफ क्यों लौट जाते थे?

उत्तर- धंगर समुदाय भेड़ पालते थे और भेड़ गीले मॉनसूनी हालात को बर्दाश्त नहीं कर पाती। इसीलिए धंगर वर्षा ऋतु में सूखे पठारों की तरफ चले जाते थे ताकि उनके भेड़ बारिश से बच सकें।

5. बंजारे समुदाय भारत के किन-किन क्षेत्रों में रहते थे?

उत्तर- भारत के उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कई इलाकों में बंजारा चरवाहे रहते थे।

6. ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये वन अधिनियमों ने चरवाहों के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर- ब्रिटिश सरकार ने अनेक वन-कानून बनाकर, आरक्षित तथा सुरक्षित वनों में उनके घुसने पर प्रतिबंध लगा दिया, इससे उनका जीवन काफी प्रभावित हुआ।

7. गुज्जर बकरवाल कौन हैं?

उत्तर- गुज्जर बकरवाल, भेड़-बकरियों को पालने वाले चरवाहा समुदाय है। यह समुदाय उन्नीसवीं सदी में चरागाहों की तलाश में यहाँ आकर बस गये।

8. खेतों में जानवरों के चरने से किसानों को क्या लाभ होता है?

उत्तर- खेतों में जानवरों के चरने के दौरान उनके मल-मूत्र (गोबर) से भूमि उपजाऊ हो जाती है। इसीलिए किसान अपने खेतों में चराई करवाते हैं।

9. ठूंठ किसे कहते हैं?

उत्तर- पौधों की कटाई के बाद जमीन में रह जाने वाली उनकी जड़ को ठूंठ कहते हैं।

10. उपनिवेश बनने से पहले मसाई समाज कितने सामाजिक श्रेणियों में बेटा हुआ था ?

उत्तर- उपनिवेश बनने से पहले मसाई समाज दो सामाजिक श्रेणियों - वरिस्ठ जन (एल्डर्स) और योद्धा (वॉरियर्स) में बँटा हुआ था।

11. मसाई समाज के बरिस्ठ जन (एल्डर्स) कौन-सा कार्य करते थे?

उत्तर- वरिष्ठ, जन शासन चलाते थे। वे समुदाय से जुड़े मामलों पर विचार-विमर्श करने और अहम फैसले लेने के लिए समय-समय पर सभा करते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि घुमंतू समुदायों को बार-बार एक जगह से दूसरी जगह क्यों जाना पड़ता है? इस निरंतर आवागमन से पर्यावरण को क्या लाभ हैं?

उत्तर- घुमंतू समुदायों को बार-बार एक जगह से दूसरी जगह निम्नलिखित कारणों से जाना पड़ता था :-

(1) उनकी अपनी कोई चरागाह या खेत नही होता है, जिससे दूसरे के खेतों या दूर-दूर के चारागाहों पर निर्भर रहना पडता है ।

(2) मौसम परिवर्तन के साथ-साथ उन्हें अपने चरागाह भी बदलने पडते हैं। जैसे पहाड़ों के उपरी भाग में बर्फ पड़ने पर उन्हें पहाडी के निचले हिस्से में जाना पड़ता था।

(3) बर्फ पिघलते ही उन्हें वापस ऊपर की पहाड़ों की ओर प्रस्थान करना पडता है। मैदानी भागों में इसी प्रकार बाढ़ आने पर वे ऊँचें स्थानों पर चले जाते हैं ।

इनके निरंतर आवागमन से पर्यावरण को बहुत ही लाभ पहुँचता है। जहाँ इनके मवेशी चरते हैं वहाँ की भूमि उपजाऊ हो जाती है। इसलिए किसान अपने खेतों में इनके जानवरों को चरने देते हैं। ताकि मवेशियों के गोबर, मल-मूत्र से इनके खेत भर जाये।

2. आधुनिक विश्व ने भारत और पूर्वी अफ्रीकी चरवाहा समुदायों के जीवन में जिन परिवर्तनों को जन्म दिया उनमें कई समानताएँ थीं। ऐसे दो परिवर्तनों के बारे में लिखिए जो भारतीय चरवाहों और मासाई गड़रियों, दोनों के बीच समान रूप से मौजूद थे।

उत्तर- वे परिवर्तन जो भारतीय चरवाहा समुदायों तथा मासाई पशुपालकों के लिये समान थे, वे निम्न हैं-

(i) भारतीय चरवाहा समुदायों तथा मासाई पशुपालकों दोनों को अपने-अपने चारागाहों से बेदखल कर दिया गया जिसका मतलब था दोनों के लिये चारे की कमी तथा जीवन-यापन की समस्या का उत्पन्न होना ।

(2) भारतीय चरवाहा समुदाय तथा मासाई पशुपालक दोनों को ही समस्याओं का सामना समान रूप से करना पड़ा। जब वनों को 'आरक्षित' घोषित कर वनों में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर दिया गया।

3. अफ़्रीका के पशुपालक समुदायों के नाम बताइये। वे कहाँ पाए जाते हैं? उनका पेशा क्या है ?

उत्तर- बेदुईन्स, बरबेर्स, मासाई, सोमाली, बोरान और तुर्काना अफ्रीका के कुछ पशुपालक समुदाय हैं। इनमें से अधिकांश अर्ध-शुष्क घास के मैदानों या शुष्क रेगिस्तानों में पाए जाते हैं जहाँ वर्षा आधारित कृषि कठिन है। ये मवेशी, ऊँट, बकरी आदि पालते हैं और दूध और मांस जैसे अपने उत्पाद बेचते हैं। अन्य लोग व्यापार और परिवहन के माध्यम से अपनी आजीविका चलाते हैं। इनमें से कुछ लोग देहाती गतिविधि को कृषि के साथ जोड़ते हैं जबकि अन्य लोग अपनी अल्प और अनिश्चित आय को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के छोटे-मोटे काम करते हैं।

4. भारत के पहाड़ों में रहने वाले चरवाहों के जीवन का वर्णन करें।

उत्तर- जम्मू और कश्मीर के गुज्जर बकरवाल, हिमाचल प्रदेश के गद्दी चरवाहे, गढ़वाल और कुमाऊं के गुज्जर पशुपालक, भोटिया, शेरपा और किन्नौरी पहाड़ों में रहने वाले चरवाहे हैं। ये हर साल अपने ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन चरागाहों के बीच जो चक्र चलता है उसके द्वारा ये अपने मौसमी गतिविधियों को परिवर्तित करतें हैं ।

ये अपनी गतिविधियों को मौसमी परिवर्तनों के अनुसार समायोजित करते हैं और विभिन्न स्थानों में उपलब्ध चरागाहों का प्रभावी उपयोग करते हैं। जब चारागाह ख़त्म हो जाते हैं या मौसम प्रतिकूल हो जाता है तब वे अपने झुंडों को नए क्षेत्रों में ले जाते हैं।

5. कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के देहाती खानाबदोशों की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें?

उत्तर- कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में सूखा केंद्रीय पठार है जो पत्थर और घास से ढका हुआ है, जहां मवेशी, बकरी और भेड़पालक रहते हैं। गोल्ला मवेशी चराते थे । कुरुमा और कुरुबा भेड़-बकरी पालते थे तथा बुने हुए कंबल बेचते थे। वे जंगल के पास रहते थे, ज़मीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर खेती करते थे, विभिन्न प्रकार के छोटे-मोटे व्यापार करते थे। ये अपनी मवेशियों और जड़ी-बूटियों की देखभाल करते थे।

6. भारत के प्रमुख चरवाहें समुदायों का राज्यवार नाम लिखिए?

उत्तर- भारत के प्रमुख चरवाहें समुदाय निम्नलिखित है-

जम्मु कश्मीर - गुज्जर बकरवाल ।

हिमांचल प्रदेश - गद्दी समुदाय।

महाराष्ट्र - धंगर।

राजस्थान - राइका।

कर्नाटक और आध्र प्रदेश गोल्ला, कुरूमा और कुरूबा समुदाय।

उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश - बंजारे ।

6. चराई-कर ने चरवाहा समुदाय पर क्या प्रभाव डाला?

उत्तर- चराई-कर ने चरवाहा समुदाय पर बहुत नकारात्मक प्रभाव डाला। भारत में अंग्रेज सरकार ने 19वीं शताब्दी के मध्य अपनी आय

बढ़ाने के लिए अनेक नए कर लगाए। इन्हीं में से एक चराई- कर था, जो पशुओं पर लगाया गया था। यह कर प्रति पशु लिया जाता था। कर वसूली के तरीकों में परिवर्तन के साथ-साथ यह कर निरंतर बढ़ता गया। पहले तो यह कर सरकार स्वयं वसूला करती थी परंतु बाद में यह काम ठेकेदारों को सौंप दिया गया। ठेकेदार बहुत अधिक कर वसूल करते थे और सरकार को एक निश्चित कर ही देते थे। फलस्वरूप खानाबदोशों का शोषण होने लगा। अतः बाध्य होकर उन्हें अपने पशुओं की संख्या कम करनी पड़ी। फलस्वरूप खानाबदोशों के लिए रोजी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई। इस प्रकार औपनिवेशिक सरकार द्वारा लागू किए गए चराई कर के नियम ने चरवाहा समुदायों के जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक कष्टपूर्ण बना दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. इस बारे में चर्चा कीजिए कि औपनिवेशिक सरकार ने निम्नलिखित कानून क्यों बनाए ? यह भी बताइए कि इन कानूनों से चरवाहों के जीवन पर क्या असर पड़ा?

(क) परती भूमि नियमावली ।

(ख) वन अधिनियम ।

(ग) अपराधी जनजाति अधिनियम ।

(घ) चराई कर ।

उत्तर- (क) **परती भूमि नियमावली:-** औपनिवेशिक सरकार चरागाह भूमि क्षेत्र को परती भूमि मानती थी। उसके अनुसार चरागाह भूमि से न तो कर मिलता था और न ही फसल मिलती थी। औपनिवेशिक सरकार की आय अधिक से अधिक भूमि कर पर टिका हुआ था। इसलिए औपनिवेशिक सरकार ने भारत में परती भूमि नियम लागू किए। इन नियमों द्वारा बहुत सारी चरागाह भूमि को कृषि के अधीन लाया गया। जिस कारण भारत में चरागाह क्षेत्र कम हो गया और चरवाहों के लिए अपने पशुओं को चराने की समस्या उत्पन्न हो गई।

(ख) **वन-अधिनियम:-** ब्रिटिश सरकार ने इन्हें उन लकड़ियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए बनाया था जो व्यावसायिक महत्व का था। औपनिवेशिक सरकार ने अनेक वन कानून पास कर चरवाहों का जीवन ही बदल दिया। आरक्षित तथा सूरक्षित वनों की श्रेणी के वनों में उनके घुसने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया क्योंकि पशु, पौधे के नई कोपलों को खा जाते थे। जिन वनों में उन्हें प्रवेश करने की अनुमति थी, उन वनों में भी उनकी गतिविधियों पर नियंत्रण रखा जाता था। उन्हें इन वनों में प्रवेश के लिए परमिट लेना पड़ता था। वनों में जाने व वापिस आने का समय भी निश्चित कर दिया गया। चरवाहे निश्चित दिनों तक ही वन का प्रयोग कर सकते थे। इसके बाद उनका प्रवेश वर्जित था। यदि वे निश्चित दिनों से अधिक समय तक वन में रहते थे, तो उन पर जुर्माना लगा दिया जाता था।

(ग) **अपराधी जनजाति अधिनियम:-** 1871 ई. में औपनिवेशिक सरकार ने अपराधी जनजाति अधिनियम (Criminal Tribes Act) पारित किया। इस कानून के तहत दस्तकारों, व्यापारियों और चरवाहों के बहुत सारे समुदायों को अपराधी समुदायों की सूची में रख दिया गया। उन्हें कुदरती और जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया गया। इस कानून के लागू होते ही ऐसे सभी समुदायों को कुछ खास अधिसूचित गाँवों/बस्तियों में बस जाने का हुक्म सुना दिया गया। उनकी बिना परमिट आवाजाही पर रोक लगा दी गई। ग्राम्य पुलिस उन पर सदा नजर रखने लगी ।

(घ) **चराई करः-** उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में अंग्रेज़ी सरकार ने अपनी आय बढ़ाने के कई नए कर लगाए। अब चरागाहों में चराई करने वाले पशुओं पर भी कर लगा दिया गया। यह कर प्रति पशु पर लिया जाता था । कर वसूली के तरीकों में परिवर्तन के साथ-साथ यह कर निरंतर बढ़ता गया। पहले तो यह कर सरकार स्वयं वसूल करती थी परंतु बाद में यह काम ठेकेदारों को सौंप दिया गया। ठेकेदार बहुत अधिक कर वसूल करते थे और सरकार को एक निश्चित कर ही देते थे। इसलिए उन्हें बाध्य होकर अपने पशुओं की संख्या कम करनी पड़ी। फलस्वरूप खानाबदोशों के लिए रोजी-रोटी की समस्या उत्पन्न हो गई।

2. मासाई समुदाय के चरागाह उससे क्यों छीन गए? कारण बताएँ-

उत्तर- मासाई अफ्रीका के चरवाहा समुदाय थे। वे मुख्यरूप से केन्या तथा तंज़ानिया में रहते थे ।

(i) उन्नीसवीं सदी के अंत में यूरोप की साम्राज्यवादी ताकतों ने अफ्रिका में कब्जे के लिए मारकाट शुरु कर दी। बहुत सारे इलाकों को छोटे-छोटे उपनिवेशों में तब्दील कर अपने कब्जे में ले लिया। 1885 ई. में मासाईलैंड को ब्रिटिश कीनिया और जर्मन तांगान्यिका के बीच एक अंतरराष्ट्रीय सीमा खींचकर बराबर-बराबर हिस्सों में बाँट दिया गया। गोरों को शिकार के लिए बेहतरीन चरागाहों को अपने कब्जे में ले लिया।

(ii) मासाइयों को दक्षिण कीनिया और उत्तरी तंज़ानिया के छोटे से इलाके में समेट दिया गया। औपनिवेशिक शासन से पहले मासाइयों के पास जितनी ज़मीन थी उसका लगभग 60 फ़ीसदी हिस्सा उनसे छीन लिया गया। उन्हें ऐसे सूखे इलाकों में कैद कर दिया गया जहाँ न तो अच्छी बारिश होती थी और न ही हरे-भरे चरागाह थे । उन्नीसवीं सदी के अंतिम सालों में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार पूर्वी अफ्रीका में भी स्थानीय किसानों को अपनी खेतो के क्षेत्रफल को ज़्यादा से ज़्यादा फैलाने के लिए प्रोत्साहित करने लगी।

(iii) जैसे -जैसे खेती का प्रसार हुआ वैसे-वैसे चरागाह खेतों में तब्दील होने लगे। बहुत सारे चरागाहों को शिकारगाह बना दिया गया। कीनिया में मासाई मारा व साम्बुरु नेशनल पार्क और तंज़ानिया में सेरेंगेटी पार्क जैसे शिकारगाह इसी तरह आस्तित्व में आए थे। इन आरक्षित जंगलों में चरवाहों का आना मना था। इन इलाकों में न तो वे शिकार कर सकते थे और न अपने जानवरों को चरा सकते थे।

3. महाराष्ट्र के धंगरों पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- धंगर महाराष्ट्र में एक महत्वपूर्ण देहाती समुदाय थे। बीसवीं सदी

की शुरुआत में उनकी आबादी 467,000 होने का अनुमान लगाया गया था। धंगर मुख्यतः चरवाहे थे । उनमें से कुछ कंबल बुनने वाले थे, जबकि कुछ भैंस पालते थे।

धंगर मानसून के दौरान महाराष्ट्र के मध्य पठार में रहते थे। केंद्रीय पठार में बहुत कम वर्षा होती थी और वह बहुत शुष्क था। वह केवल कंटीली झाड़ियों से ढका हुआ था। चूँकि मिट्टी ख़राब थी इसलिए वहाँ केवल बाजरा जैसी सूखी फसलें ही उगाई जा सकती थीं।

मानसून के दौरान तस्वीर बिल्कुल अलग थी। यह क्षेत्र धंगर झुंडों के लिए एक विशाल चारागाह बन गया। धंगर हर साल अक्टूबर तक अपने बाजरे की कटाई करते थे और फिर पश्चिम की ओर चले जाते थे।

धंगर प्रतिवर्ष मार्च के महीने में कोंकण पहुँचते थे। कोंकण उच्च वर्षा और समृद्ध मिट्टी वाली एक समृद्ध कृषि भूमि थी। कोंकणी किसानों द्वारा चरवाहों का स्वागत किया गया। कोंकणी किसानों ने धनगरों को चावल की आपूर्ति भी दी, जो इसे वापस पठारों में ले गए, जहां अनाज दुर्लभ था।

जैसे ही मानसून शुरू हुआ, धंगरों ने अपने झुंडों के साथ कोंकण और तटीय क्षेत्रों को छोड़ दिया और सूखे पठार पर अपनी बस्तियों में लौट आये। क्योंकि उनकी भेड़ें गीली मानसून की स्थिति को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं । लगातार कठिन परिश्रम एवं परिवर्तन चरवाहों की जीवन शैली थी।